

डॉ. क्रेग कीनर, अधिनियम, व्याख्यान 3, ल्यूक की इतिहासलेखन

© 2024 क्रेग कीनर और टेड हिल्डेब्रांट

यह एक्ट्स की पुस्तक पर अपने शिक्षण में डॉ. क्रेग कीनर हैं। यह सत्र संख्या 3, ल्यूक की इतिहासलेखन है।

पहले दो सत्रों में से अधिकांश में, मैं प्राचीन काल की बहुत सारी सामग्री को संबोधित कर रहा था जो बाइबिल के बाहर थी, और मेरे पीएचडी छात्र, जब मैं डॉक्टरेट स्तर के पाठ्यक्रम के रूप में अधिनियम पढ़ाता हूँ, तो मैं अक्सर उन्हें असाइनमेंट देता हूँ ताकि उनमें से प्रत्येक को बेहतर बनाया जा सके। किसी प्राचीन इतिहासकार का अध्ययन करना।

एक व्यक्ति के पास थ्यूसीडाइड्स, पॉलीबियस, टैसिटस, सुएटोनियस, डियो कैसियस, हैलिकार्नासस के डायोनिसियस, थियोडोरस सिकुलस, एपियन इत्यादि होंगे। और फिर वे अपने संबंधित इतिहासकारों से अपनी अंतर्दृष्टि लाते हैं और प्रत्येक इतिहासकार पर एक संक्षिप्त रिपोर्ट देते हैं। इसलिए, यदि आपको यह पसंद नहीं है तो आप खुश हो सकते हैं, कि अब आप पाठ में थोड़ा सा शामिल होने जा रहे हैं।

तो, लूका 1:1-4 हमें उन स्रोतों के बारे में बहुत कुछ बताता है जो लूका के लिए उपलब्ध थे। मैंने लिखित स्रोतों और मौखिक स्रोतों से पहले उल्लेख किया था, ल्यूक ने अपनी जांच से या किसी तरह संपूर्ण ज्ञान प्राप्त करके इसकी पुष्टि की थी, और यह सामग्री प्रारंभिक चर्च में पहले से ही व्यापक रूप से ज्ञात थी। जैसा कि हमने पहले उल्लेख किया है, ल्यूक ने शायद 62 और 90 के बीच, शायद 70 के दशक की शुरुआत में लिखा था, हालांकि अब ऐसे कई लोग हैं जो बाद की तारीख लेते हैं।

लेकिन मैंने आपको 70 के दशक पर बहस करने के अपने कारण बता दिये हैं। जब तक लूका लिखता है, तब तक बहुत से लोग लूका 1:1 लिख चुके होते हैं। यह सिर्फ एक व्यक्ति नहीं है जिसने लिखा है। हम जानते हैं कि उसने मार्क का इस्तेमाल किया था।

यह सिर्फ दो लोगों ने नहीं लिखा है। हम जानते हैं कि उन्होंने मैथ्यू के साथ कुछ समान सामग्री साझा की थी। लेकिन बहुतों ने उन चीजों का लेखा-जोखा तैयार करने का बीड़ा उठाया है जो हमारे बीच पूरी हुई हैं।

अब क्या घटनाएँ, मान लीजिए, हमसे साढ़े चार दशक पहले, स्मृतिलोप में डूबी हुई हैं? हममें से कुछ लोग वास्तव में इतने बूढ़े हो गए हैं कि साढ़े चार दशक पहले की घटनाओं को याद कर सकें। लेकिन जो लोग नहीं हैं, निश्चित रूप से, आप कुछ ऐसे लोगों को जानते हैं जो लगभग साढ़े चार दशक पहले थे। और यदि उस अवधि की महत्वपूर्ण घटनाएं, उनके जीवन की महत्वपूर्ण घटनाएं, यहां और वहां के विवरण, यादें सही नहीं हैं, लेकिन यदि महत्वपूर्ण घटनाएं हैं, खासकर यदि यह कुछ ऐसा है जहां कई लोग इसके बारे में जानते थे और एक-दूसरे के संपर्क में हैं और

बात कर सकते हैं यह, और विशेष रूप से यदि ये ऐसी चीजें हैं जिनके बारे में उन्होंने तब से नियमित रूप से बात की होगी, जो कि यीशु के शिष्यों के मामले में होगा, या शायद स्वयं ल्यूक के साथ उन चीजों के बारे में जो उसने अनुभव की थीं।

ऐसे मामलों में, साढ़े चार दशक इतना लंबा नहीं है कि हम उम्मीद करें कि सब कुछ भूलने की बीमारी में डूबा होगा, जो कि कुछ विद्वानों ने अपनाया है। ल्यूक का उल्लेख है कि उसके पास मौखिक स्रोत हैं। ल्यूक 1.2, जैसा कि वे हमें उन लोगों द्वारा सौंपे गए थे जो पहले से ही प्रत्यक्षदर्शी और वचन के सेवक थे।

खैर, पैराडिडोमी का अलग-अलग संदर्भों में कई अलग-अलग अर्थ हो सकते हैं, लेकिन यह शब्द मौखिक परंपरा के बारे में बात करने के संदर्भ में दिया गया है, आम तौर पर यह बहुत सावधान मौखिक परंपरा के लिए एक तकनीकी शब्द था, जहां छात्र अपने शिक्षकों से जानकारी प्राप्त करते थे और वे इसे आगे बढ़ाऊंगा. यह कितना सही हो सकता है? खैर, मैं अपने एक पड़ोसी के बारे में सोचता हूं जो 96 साल का है, अन्ना गुलिक और अन्ना, अमेरिकी संस्कृति के रेडियो पर निर्भरता, टेलीविजन पर निर्भरता और अब इंटरनेट पर निर्भरता से पहले थे। यदि आप कुछ देखना चाहते हैं, तो आप विकिपीडिया या किसी भी चीज़ पर जाते हैं, जो सही हो भी सकता है और नहीं भी, लेकिन कम से कम कोई, इस पर निर्भर करता है कि लेख को कितनी बार संपादित किया गया है और कुछ भी।

लेकिन लोग, वे जानकारी के लिए उसके पास जाते हैं। उन्हें चीजें साउंड बाइट्स और वीडियो बाइट्स में मिलती हैं। लेकिन जब वह बड़ी हो रही थी, तब भी अमेरिकी संस्कृति में, लोग सामने के बरामदे पर बैठते थे और वे अपने माता-पिता की पीढ़ी, अपने माता-पिता की पीढ़ी आदि की कहानियाँ सुनाते थे।

और एना मुझे अपने परिवार की 1700 के दशक की कहानियाँ सुनाने में सक्षम थी। और इनमें से कुछ कहानियों में, जानकारी ऐसी जानकारी थी जो सार्वजनिक रिकॉर्ड का विषय हो सकती है। मैंने जाकर इसकी जाँच की, और निश्चित रूप से, उसकी कहानियाँ सही थीं।

यह वह जानकारी है जो पिछले कुछ सौ वर्षों से चली आ रही है और जिसे वह अब भी अपने बुढ़ापे में याद करती है। उसके कुछ अन्य हिस्से भी उतने मजबूत नहीं हैं जितने पहले थे, लेकिन उसकी याददाश्त काफी तेज है। यह कई अन्य समाजों, कई पारंपरिक समाजों में और भी अधिक सच है।

मेरी पत्नी, जो अफ्रीका से है, के पास पीएच.डी. है। फ्रांस से इतिहास में, पेरिस VII विश्वविद्यालय से। मेरी पत्नी का कहना है कि अब युवा पीढ़ी के साथ बहुत सारा मौखिक इतिहास लुप्त हो रहा है, लेकिन यह पीढ़ियों से चला आ रहा है। और इसलिए, वह लोगों का साक्षात्कार लेने, चीजों को लिखने के लिए पारिवारिक इतिहास को लेकर बहुत सावधान रहती है, ताकि वे आधुनिकता या उत्तर-आधुनिकता या हम जिस भी दौर में हों, उत्तर-आधुनिकता के संक्रमण में खो न जाएं।

किसी भी मामले में, मौखिक परंपरा कितनी सही थी? खैर, कुछ बिंदु जिन पर हमें विचार करने की आवश्यकता है वे हैं प्राचीन काल में याद रखना, मैं उस पर सबसे अधिक समय बिताऊंगा, नोट्स, कहावतें, संग्रह, गॉस्पेल में, अरामी लय के साक्ष्य और चर्च में प्रत्यक्षदर्शियों की प्रमुखता। स्मृति और प्राचीनता के संदर्भ में, आपके पास अक्सर ऐसे कहानीकार होते थे जो घंटों तक कहानियाँ सुनाते थे। अब कुछ लोग कहते हैं, ओह, ये केवल शिक्षित लोग थे जिनके पास ये वास्तव में मजबूत यादें थीं।

यह सच नहीं है। आपके पास यात्रा करने वाले चारण थे जो वस्तुतः अनपढ़ थे, और फिर भी वे संपूर्ण इलियड और ओडिसी को दिल से दोहरा सकते थे। तो, किताबें, बहुत मोटी नहीं, लेकिन फिर भी, मेरा मतलब है दो पूरी किताबें।

प्राचीन मानकों के अनुसार, ये 48 पुस्तकें थीं, प्रत्येक में 24 पुस्तकें थीं। इसलिए कहानीकार इन कहानियों को घंटों तक दोहराने में सक्षम थे। पेशेवर सार्वजनिक वक्ताओं या राजनेताओं या वक्तृत्व कला में प्रशिक्षित किसी भी व्यक्ति के लिए वक्तृत्व कला के पाँच बुनियादी कार्यों में से एक था, भाषण देने की तैयारी के लिए भाषण को पहले से याद रखना।

और फिर जब आप इसे देंगे, तो आप इसमें कुछ अन्य चीजें जोड़ सकते हैं। लेकिन ये अक्सर भाषण होते थे जो कुछ घंटों की लंबाई के हो सकते हैं। मैं धोखा दे रहा हूँ, मैं कभी-कभी अपने नोट्स देख रहा हूँ, लेकिन उन्हें अपने नोट्स देखने की जरूरत नहीं थी क्योंकि उनके पास चीजें याद थीं।

प्रारंभिक शिक्षा, प्रारंभिक शिक्षा की सबसे बुनियादी विशेषता याद रखना था, अक्सर प्रसिद्ध शिक्षकों की बातें याद रखना। इसलिए, यदि किसी के पास वह प्रारंभिक शिक्षा है, तो उन्हें पता होगा कि यह कैसे करना है। यदि उनके पास वह प्रारंभिक शिक्षा नहीं होती, तो उन्होंने इतने सारे लोगों को बातें करते हुए सुना होता कि वे अभी भी उसे महत्व देते और इस तरह की कई बातें सीखते।

गुरुजनों के शिष्य, यह थी उन्नत शिक्षा। शिक्षा का तृतीयक रूप जहां आपके पास शिक्षकों के शिष्य होते थे, ग्रीक स्कूलों में यह दर्शनशास्त्र पर या अधिक बार ध्यान केंद्रित किया जाता था क्योंकि इसे कई लोगों के लिए भाषण, भाषण या वक्तृत्व कला के लिए अधिक व्यावहारिक माना जाता था। और निस्संदेह, यहूदी लोगों के लिए, यह टोरा का अध्ययन था।

एक व्यक्ति ने अक्सर इसे किशोरावस्था में ही शुरू कर दिया था। आमतौर पर, उन्होंने इसे किशोरावस्था में ही शुरू कर दिया था। जब यीशु के शिष्य यीशु का अनुसरण कर रहे थे तब वे संभवतः औसतन किशोरावस्था में थे।

पीटर जिसकी शादी हो चुकी थी, हो सकता है कि वह थोड़ा बड़ा हो, लेकिन जब उनकी शादी शुरू हुई थी तब वह शायद 20 साल का भी नहीं रहा होगा। किसी भी मामले में, शिक्षकों के शिष्यों की प्राथमिक ज़िम्मेदारी यह याद रखना था कि उनके शिक्षक ने क्या सिखाया था, और जहाँ तक वे उस विचारधारा के स्कूल का हिस्सा बने रहे, उन्हें अपने शिक्षक द्वारा उन्हें जो

सिखाया गया था, उसे सटीकता से आगे बढ़ाना था। यदि वे दार्शनिक शिष्य होते तो उसी का प्रचार करते रहते।

दार्शनिक विद्यालयों के कई संस्थापकों, कई संतों की शिक्षाएँ उनके समुदायों के लिए विहित हो गईं। वे आम तौर पर उन्हें अपने अनुयायियों के लिए प्रकाशन से बाहर कर देते थे, लेकिन ईसा पूर्व 5वीं शताब्दी में, वे अक्सर वही लिखते थे जो उनके शिक्षक उन्हें सिखाते थे। लेकिन यह एक प्राथमिक ज़िम्मेदारी थी जो शिष्यों की थी।

अब यदि आप अपने शिक्षक से सहमत नहीं हैं, तो इसकी अनुमति है। मेरा मतलब है कि कोई भी आपको अपने शिक्षक से सहमत नहीं करा सकता है, लेकिन फिर भी, उन्होंने जो कहा है उसे सटीक रूप से प्रस्तुत करने के लिए आप उनका सम्मान करते हैं। आप सम्मानपूर्वक उनसे असहमत हो सकते हैं, लेकिन आपने शब्द बनाकर उनके मुंह में नहीं डाले।

यह सोचने का कोई कारण नहीं है कि यीशु के शिष्यों ने भी ऐसा किया होगा। जो उदाहरण सबसे नाटकीय है वह कभी-कभी पाइथागोरस द्वारा दिया गया उदाहरण है। पाइथागोरस के शिष्यों को एक दिन पहले सुनी गई हर बात को दोहराए बिना सुबह बिस्तर से उठने की अनुमति नहीं थी।

इसलिए, मैं कल सुबह आपकी परीक्षा ले सकता हूँ, लेकिन मैं सुबह उठने वाला व्यक्ति नहीं हूँ इसलिए हम इसे जाने देंगे। लेकिन ऐसा करने वाले पाइथागोरस अकेले नहीं थे। हम ल्यूकन की दूसरी शताब्दी की कृति में पढ़ते हैं, वह कुछ दार्शनिकों के बारे में बात कर रहा है और वे वह सब कुछ दोहरा रहे हैं जो उन्होंने एक दिन पहले सुना था।

लोग अपने गुरु के कार्यों के साथ-साथ उनकी शिक्षाओं को भी सीखेंगे। मेरा मतलब है कि शिक्षाएँ थोड़ी अधिक सटीक होंगी। आपको उस स्थिति में भी सटीक शब्दांकन प्राप्त करने की आवश्यकता नहीं थी।

संक्षिप्त व्याख्या एक मानक अभ्यास था। लेकिन आप शिक्षाएं सीखेंगे, लेकिन आप उनके कार्यों से भी सीखेंगे। इसलिए, उदाहरण के लिए, बाद के रब्बियों के मामले में, ये रब्बी पहले के रब्बियों के कार्यों को सीखेंगे और कभी-कभी उन्हें कानूनी मिसाल के रूप में उपयोग करेंगे।

खैर, यह टोरा के विरुद्ध नहीं हो सकता क्योंकि रब्बी ने ऐसा किया था। और वे इसे एक तर्क के रूप में उद्धृत करेंगे। एक अतिशयोक्तिपूर्ण कहानी है, चरम कहानी, शायद, मुझे नहीं पता कि यह सच्ची कहानी है या नहीं, लेकिन ऐसा कहा जाता है कि एक रब्बी तैयार हो रहा था, वह अपने शयनकक्ष में था, वह कुछ समय अकेले बिताने के लिए तैयार हो रहा था अपनी पत्नी के साथ जब उन्होंने अपने बिस्तर के नीचे एक शिष्य को पाया तो चौंककर बोले, तुम मेरे बिस्तर के नीचे क्या कर रहे हो? जिस पर शिष्य ने उत्तर दिया, ऐसा कहा जाता है कि हमें हर चीज़ अपने शिक्षकों के उदाहरण से सीखनी चाहिए।

अगर मैं आपमें से किसी को अपने शयनकक्ष में पाता हूँ, तो आप इस कोर्स को छोड़ देंगे। मेरे व्याख्यान के लिए कोई ग्रेड नहीं है जिसके बारे में मुझे पता है जब तक कि कोई आपको ग्रेड नहीं

दे रहा हो, लेकिन मैं यह देखूंगा कि आप किसी भी तरह से असफल हो जाएं। लेकिन किसी भी मामले में, शिक्षकों के शिष्यों को उनके शिक्षकों ने जो किया और सिखाया उससे सीखना था।

और अक्सर इन्हें बाद में जीवन और कहावतों के संग्रह में एकत्र किया गया। अब नोट्स लेने के संदर्भ में, यहूदी परंपरा में, यह मुख्य रूप से मौखिक था, जहाँ तक हम बाद के रब्बियों से बता सकते हैं। लेकिन उन्होंने मुख्य रूप से याद किया।

लेकिन कभी-कभी वे सामग्री के बड़े खंडों को याद रखने में मदद के लिए नोट्स लेते थे। रब्बी अक्सर आसानी से याद किए जाने योग्य रूप में बोलते थे ताकि शिष्य इसे अधिक आसानी से याद रख सकें। एक रब्बी ने अपने छात्र की प्रशंसा करते हुए कहा कि वह एक हौज, एक पानी की टंकी है जिसमें पानी की एक बूंद भी नहीं गिरती है।

अब यह तो सिर्फ एक उदाहरण है। मैंने इसे रब्बी साहित्य में पाया और मैंने पाया कि अन्य लोग इसे रब्बी साहित्य से उद्धृत करते हैं और हम सभी एक ही उदाहरण का हवाला दे रहे हैं। तो, यह सिर्फ एक उदाहरण है, लेकिन यह व्यापक सिद्धांत का एक उदाहरण है कि इसे कितनी गंभीरता से लिया गया था।

अब रब्बी साहित्य कई पीढ़ियों तक संरक्षित है। इसलिए, कई पीढ़ियों के दौरान, कुछ मौखिक परंपराएँ मिश्रित हो जाएँगी इत्यादि। लेकिन हम यीशु की परंपरा के मामले में उस बारे में बात नहीं कर रहे हैं, क्योंकि मार्क यीशु के सार्वजनिक मंत्रालय के बाद एक पीढ़ी के भीतर लिख रहे हैं।

और यदि वह इसे पीटर से प्राप्त करता है, जैसा कि पापियास ने दूसरी शताब्दी की शुरुआत में कहा था, तो सामग्री शुरुआत में वापस चली जाती है। और वास्तव में उस पर बस एक और विचार। मैं पीछे गया और आम हस्तियों की अलग-अलग प्राचीन जीवनियों की तुलना की और ओवरलैप की डिग्री इतनी पर्याप्त है कि इससे पता चलता है कि भले ही आपके पास अलग-अलग लेखक हों, जब वे किसी के बारे में सिर्फ एक पीढ़ी या यहां तक कि दो पीढ़ी पहले भी लिख रहे हों, हम' मैं उनके निर्माण कार्य के बारे में बात नहीं कर रहा हूँ।

हम उनके बारे में बात कर रहे हैं कि उनके सामने बहुत सारी सामग्री है और इस पर उनके अपने दृष्टिकोण हैं। कभी-कभी वे इसे गलत समझ लेते हैं, लेकिन अधिकांशतः इसका सार बिल्कुल सटीक होता है। अब, रब्बी के शिष्य कुछ नोट्स ले सकते थे, लेकिन मुख्य रूप से वे मौखिक रूप से काम करते थे।

ठीक है, कुछ लोग कहते हैं कि आप रब्बियों ने जो कहा उस पर निर्भर नहीं रह सकते क्योंकि वे मौखिकता में इतनी रुचि रखते थे कि ये बातें तीसरी शताब्दी की शुरुआत तक, लगभग 220 या 225 ई. तक लिखी जानी शुरू नहीं हुईं। यह सच हो सकता है, लेकिन जोसेफस पहली सदी में लिख रहा है। वह याद रखने की प्रथा और यहूदियों द्वारा टोरा को मौखिक रूप से याद करने के बारे में भी बात करते हैं।

इसलिए, प्राचीन काल में इन स्मृति कौशलों को इस हद तक व्यापक रूप से महत्व दिया जाता था कि कई पश्चिमी लोग असहज महसूस करते हैं। हमें आश्चर्य होता है. यह एक ऐसी संस्कृति थी जहां स्मरणीय कौशल को अत्यधिक महत्व दिया जाता था।

यदि मैं इसके कुछ और उदाहरण दे सकूँ। मैंने अनपढ़ बाइबिल का एक उदाहरण दिया। सेनेका द एल्डर काफी साक्षर था, लेकिन वह सिर्फ एक स्पष्ट और बहुत ही ग्राफिक उदाहरण प्रदान करता है कि स्मृति कितनी दूर तक जा सकती है और लोग स्मृति को कितना महत्व देते हैं।

उनका कहना है कि जब वह छोटे थे, तो वह 2,000 नाम सुन सकते थे और फिर उन्हें ठीक उसी क्रम में दोहरा सकते थे, जिस क्रम में उन्होंने अभी सुना था। उसे कविता की 200 पंक्तियाँ दी जा सकती थीं और वह उन्हें उल्टे क्रम में दोहरा सकता था। यह एक उल्लेखनीय स्मृति है।

वह कहते हैं, अच्छा अब मैं बूढ़ा हो गया हूँ। मुझे चीज़ें भी याद नहीं रहतीं. मेरी याददाश्त इतनी अच्छी नहीं है.

और जब वह आपकी अपेक्षाओं को कम कर देता है, तो वह अपने काम, कॉन्ट्रोवर्सिया में, सौ से अधिक घोषणाओं के खंडों को फिर से गिनाने के लिए आगे बढ़ता है। ये वक्तव्य विद्यालय में अभ्यास भाषण थे। सौ से अधिक भाषणों में से, वक्तव्य विद्यालय में उनके सहयोगियों के अभ्यास भाषण।

अब मेरे पास होमिलेटिक्स था और मुझे अपनी पहली होमिलेटिक्स कक्षा याद है, नहीं, यह मेरी दूसरी थी, देखिए मैं पहले से ही भूल रहा हूँ। मेरी दूसरी समलैंगिकता कक्षा में, मुझे अपने पहले उपदेश का पाठ और सामान्य विषय याद है। लेकिन मैं आपको शब्दशः कुछ नहीं बता सका।

मैं शायद उस तरह की बात का पुनर्निर्माण कर सकता हूँ जो मैंने कही होगी। और मुझे इस बात की कोई याद नहीं है कि कमरे में किसी और ने क्या उपदेश दिया था। हमारे कमरे में लगभग सौ छात्र नहीं थे।

तो, सेनेका के पास यह अद्भुत स्मृति थी। लेकिन सेनेका इसमें अकेली नहीं थी। आपके पास एक ऐसे व्यक्ति का एक और उदाहरण है जो नीलामी में गया और पूरे दिन सुना, कोई नोट नहीं लिया।

दिन के अंत में, आपको बेची गई प्रत्येक वस्तु, वह व्यक्ति जिसे बेचा गया, और वह कीमत जिसके लिए वह बेची गई थी, बता सकता है। कोई और व्यक्ति जो कविता पाठ में गया था और उसने कविता पढ़ते हुए सुनी और उसे पढ़ते हुए सुनने के बाद उठकर कहा, यह साहित्यिक चोरी है। तुमने वो कविता चुरा ली.

वह कविता मैंने लिखी है और मैं इसे साबित कर सकता हूँ। और उसे याद करके सुनाया. सामने वाला व्यक्ति भयभीत हो गया क्योंकि वह इसे याददाश्त से दोहरा नहीं सका।

तभी पीछे वाले ने कहा, नहीं, बस मजाक कर रहा हूँ. मैं आपको बस यह दिखाना चाहता था कि मेरी याददाश्त कितनी अच्छी है। जब आप इसे पढ़ रहे थे तो मैंने इसे याद कर लिया।

खैर, यादें काफी सटीक हो सकती हैं। मैं यह नहीं कहूँगा कि आम लोग ऐसा कर सकते हैं। लेकिन क्योंकि संस्कृति स्मृति को बहुत महत्व देती है, और कुछ लोगों ने कहा है, ठीक है, अनपढ़ नहीं।

खैर, हमारे पास चारण हैं। साथ ही, कई संस्कृतियों में, स्मृति कौशल साक्षरता के व्युत्क्रमानुपाती होते हैं। मेरा मतलब है, जब आप चीजों को देख सकते हैं, तो आपको उन्हें ठीक से याद रखने की ज़रूरत नहीं है।

आज, कुछ संस्कृतियों में, कुछ कुरान स्कूलों में ऐसे छात्र हैं जो बड़ी मात्रा में या यहां तक कि पूरे कुरान को अरबी में याद कर सकते हैं। कई बार तो उन्हें अरबी भी नहीं आती. तो, स्मृति को अनुशासित किया जा सकता है।

मैं मध्यावधि और फाइनल से पहले अपने छात्रों को इसकी याद दिलाना पसंद करता हूँ। लेकिन किसी भी मामले में, कभी-कभी छात्र नोट्स ले लेते थे। यह यूनानियों के बीच अधिक आम था, लेकिन हेलेनिस्टिक संस्कृति लंबे समय से गैलील और यहूदिया में भी स्थापित हो चुकी थी, खासकर कुछ क्षेत्रों और कुछ क्षेत्रों में।

यूनानी शिष्यों के नोट्स काफी सटीक हो सकते हैं। आप इसे दार्शनिक विद्यालयों और वक्तृत्व विद्यालयों दोनों में पाते हैं। मैं आपको वक्तृत्व विद्यालय से एक उदाहरण दूँगा।

क्वेंटिलियन रोम में बयानबाजी के प्रोफेसर थे। उनके छात्र लड़के थे, और उन्होंने उनके व्याख्यानों पर इतने प्रचुर और सावधानीपूर्वक नोट्स लिए, और फिर वे बाद में उन नोट्स के साथ सहयोग कर सके, कि उन्होंने बाहर जाकर उनके नाम पर एक पुस्तक प्रकाशित की, जिस पर उन्होंने जवाब दिया, आप जानते हैं, वे बहुत अच्छे थे सटीक, लेकिन मेरी इच्छा है कि उन्होंने इसे पहले मुझसे चलाया होता क्योंकि मैं व्याकरण आदि की कुछ त्रुटियों को ठीक कर सकता था। दूसरे शब्दों में, उन्होंने मेरी गलतियाँ भी सुधार दीं, और काश वे उन्हें सुधार पाते।

इसलिए, यदि आप नोट्स ले रहे हैं और मेरे नाम पर एक पुस्तक प्रकाशित करने की योजना बना रहे हैं, तो आगे बढ़ें और अपने आप को सह-लेखक बना लें ताकि किसी भी गलती के लिए मैं जिम्मेदार न रहूँ। लेकिन किसी भी मामले में, मैंने इसका अधिकांश भाग अपने एक्ट्स कमेंटरी और अन्य कार्यों में पहले ही प्रकाशित कर दिया है। लेकिन यह सब कहने के लिए नोट कभी-कभी लिए जाते थे।

यीशु के शिष्यों में, ठीक है, हमारे पास एक है, कम से कम, मैथ्यू, एक कर संग्रहकर्ता जो यीशु का अनुसरण करता था, या लेवी, कर संग्रहकर्ता जो यीशु का अनुसरण करता था, निश्चित रूप से कुछ बुनियादी नोट्स लेने का कौशल रखता होगा। और शायद पुनरुत्थान के तुरंत बाद, अगर उसने उन्हें पहले नहीं लिया होता, तो शायद वह उन्हें जल्द ही ले लेता। यह आरंभिक ईसाई परंपरा है।

मुझे लगता है कि पापियास भी यही कहता है, हालाँकि मुझे लगता है कि पापियास संभवतः यीशु की शिक्षाओं का उल्लेख कर रहा था, मैथ्यू के हमारे वर्तमान सुसमाचार का नहीं, या हो सकता है कि उसने उन्हें मिश्रित कर दिया हो। लेकिन किसी भी मामले में, नोट लेना संभव था, और मैंने सुझाव दिया है कि ल्यूक के साथ अधिनियमों की पुस्तक के मामले में एक यात्रा पत्रिका थी, शायद ल्यूक ने कुछ नोट्स भी लिए थे। खैर, गॉस्पेल में, हमारे पास अक्सर एक अरामी लय होती है।

निचली गलील के बारे में हम जो जानते हैं, उसे देखते हुए यीशु संभवतः द्विभाषी थे। वह संभवतः यरूशलेम में, कम से कम, कभी-कभी ग्रीक भाषा बोलता था। लेकिन वह संभवतः अक्सर अरामी भाषा बोलते थे, विशेषकर गैलीलियन ग्रामीण इलाकों में, गैलीलियन किसानों को व्याख्यान देते थे, जिनके लिए अरामी उनकी मातृभाषा और उनकी प्राथमिक भाषा थी।

संभवतः काफी पहले, जेरूसलम चर्च में हेलेनिस्टों के कारण, आप एक साझा भाषा के रूप में ग्रीक में परिवर्तित हो गए हैं जिसे जेरूसलम में हर कोई समझता है, कम से कम कुछ हद तक। इसलिए, कहावतों का अनुवाद संभवतः बहुत पहले ही कर दिया गया था, और संभवतः अलग-अलग लोगों द्वारा एक से अधिक तरीकों से अनुवाद किया गया था। जो लोग द्विभाषी हैं, ठीक है, मेरे देश में लोगों के बारे में चुटकुले हैं, कम से कम मेरे देश में एंग्लो, एकभाषी हैं, लेकिन वे चुटकुले एक तरफ हैं।

कांगो से मेरी पत्नी, पाँच भाषाएँ बोलती है, और वह एक व्यक्ति से फ़ोन पर बात करेगी, और वह म्नुकेतुबा बोलेगी, कितांगी पर स्विच करेगी, फ्रेंच पर स्विच करेगी। वह लंगाला का उपयोग कर सकती थी, लेकिन आम तौर पर, जिस फोन पर वह बात कर रही होती है, उस पर लंगाला बोलने वाला कोई नहीं होता। मैं उससे कुछ कहूँगा, और वह मुझे अंग्रेजी में उत्तर देगी।

वह इन भाषाओं के बीच आगे-पीछे स्विच करती है। और इसलिए, जब वह अनुवाद करती है, हाँ, कभी-कभी एक भाषा से भाषण के आंकड़े होते हैं जो दूसरी भाषा में आते हैं, लेकिन मूल रूप से, आप जानते हैं, उसके दिमाग में ये अलग-अलग टैक होते हैं, और वह उन्हें एक साथ भी इस्तेमाल करने में सक्षम होती है। ऐसा वे लोग कर सकते हैं, जो उसमें कुशल हैं।

और इसलिए, इसकी बहुत संभावना है कि इनमें से कई चीज़ों का ग्रीक में अनुवाद बहुत पहले ही कर दिया गया था। फिर भी, हमारे पास अक्सर भाषण के अरामी अलंकार होते हैं। उदाहरण के लिए, यीशु के भाषण में, हम अक्सर मनुष्य के पुत्र के बारे में पढ़ते हैं, जिसका शाब्दिक अर्थ ग्रीक में है, जो ग्रीक में उतना ही अर्थ रखता है जितना अंग्रेजी में।

सचमुच, यह यहूदीवाद है। यह हिब्रू, बेन एडम, और अरामी, बार अनीश में समझ में आता है, लेकिन यह कुछ ऐसा नहीं है जो ग्रीक में समझ में आता है। लेकिन उस मुहावरे के साथ इसका ग्रीक में अनुवाद किया गया।

और इसलिए, हमारे पास ऐसे कई मामले हैं जहाँ हम अरामी लय का पुनर्निर्माण कर सकते हैं, और जो हमें सुझाव देता है वह यह है कि, हाँ, बहुत सी चीज़ें सावधानीपूर्वक संरक्षित की गई थीं।

और मैं यहां इसमें नहीं जाऊंगा. मैं अपने मैथ्यू पाठ्यक्रम में इसमें गया था, लेकिन यीशु की बहुत सी बातें यहूदी और गैलीलियन रीति-रिवाजों, यहूदी और गैलीलियन भाषण के अलंकारों, कहावतों, विचारों और यहां तक कि उनकी कहानी के दृष्टांतों को भी दर्शाती हैं।

ये वे चीज़ें नहीं हैं जिनका अनुसरण बाद के चर्च द्वारा किया गया। ये वे चीज़ें नहीं हैं जिनका उपयोग यूनानी भाषा में प्रवासी भारतीयों में, पूर्वी भूमध्यसागरीय दुनिया में किया जाता था। मेरा मतलब है, भूमध्यसागरीय दुनिया में यहूदिया और गलील के बाहर अधिकांश यूनानी ग्रीक बोलते थे।

तो, हमारे पास कई विशेषताएं हैं जो दिखाती हैं कि ल्यूक ने, हां, उसके पास उपलब्ध जानकारी को सटीक रूप से संरक्षित किया, भले ही वह अक्सर इसे बेहतर ग्रीक में भी साफ करता था। इसके अलावा, प्रारंभिक चर्च में प्रत्यक्षदर्शी प्रमुख बने हुए हैं। हम गलातियों 2 और 1 कुरिन्थियों 15 से जानते हैं, जिससे लगभग सभी विद्वान सहमत हैं कि वे प्रामाणिक रूप से पॉल द्वारा लिखे गए हैं, और निश्चित रूप से वे इससे सहमत हैं क्योंकि उन कार्यों में विवरण का वास्तविक स्थानीय मण्डलों को संबोधित करने के अलावा कोई मतलब नहीं होगा।

इसलिए, हर कोई इस बात से सहमत है कि ये प्रामाणिक हैं, लेकिन इनमें पहली शताब्दी के मध्य तक चर्च के नेताओं का उल्लेख है। पहली शताब्दी के पचास के दशक में, आपको पतरस, यीशु का प्रमुख शिष्य मिला। पॉल वास्तव में उसे उसके अरामी नाम, केफ़ा से बुलाता है, जिसे ग्रीक में अनुवादित किया गया है, केफ़ास कहते हैं।

लेकिन पीटर, जॉन, एक करीबी शिष्य, और फिर जेम्स, प्रभु का भाई। तो, परिवार के भीतर किसी को परिवार के बारे में कुछ बातें पता होंगी। खैर, ये येरूशलम चर्च के नेता थे।

वे प्रवासी चर्चों, भूमध्यसागरीय दुनिया के अन्य चर्चों में भी जाने जाते हैं और उनका सम्मान करते हैं। ग्रीस और एशिया माइनर में, ये प्रत्यक्षदर्शी प्रारंभिक चर्च में प्रमुख बने हुए हैं। वे यीशु के बारे में जानकारी के लिए एक प्रमुख स्रोत बने रहे।

प्राचीन काल में लोग, आज के लोगों की तरह, यदि आप प्राचीन इतिहासकारों का अध्ययन करते हैं, तो समझते हैं, जैसा कि हम आज समझते हैं, यदि आप सबसे अच्छी जानकारी प्राप्त करना चाहते हैं, तो आप प्रत्यक्षदर्शियों के पास जाते हैं। इसके अलावा, वह यीशु के बारे में कुछ सामग्री से निपटेगा। जब आप अधिनियमों में सामग्री से निपटते हैं, तो आप लेखक के अपने समय के और भी करीब पहुँच जाते हैं।

इसलिए, घटनाओं और ल्यूक द्वारा घटनाओं की रिकॉर्डिंग के बीच समय की अवधि और भी कम है। और हम इन चीज़ों के बारे में कुछ अन्य तर्क दे सकते हैं। स्पष्टतः, आरंभिक प्रेरित ईमानदार लोग थे।

वे सिर्फ़ ये बातें नहीं बना रहे थे। वे अपने दावों की सच्चाई के लिए मरने को तैयार थे। लोग झूठ के लिए मरते हैं, हाँ, लेकिन वे आम तौर पर उन चीज़ों के लिए नहीं मरते जिनके बारे में वे जानते हैं कि झूठ हैं, और विशेष रूप से उनमें से एक पूरे समूह के लिए नहीं।

इसलिए, यदि वे चीजों को देखने का दावा करते हैं, तो संभावना है कि उन्होंने यही देखा है। ल्यूक, अन्य सुसमाचारों की तरह, पुनरुत्थान में महिलाओं का हवाला देता है, इस तथ्य के बावजूद कि महिलाओं की गवाही को अक्सर हेय दृष्टि से देखा जाता था, और वास्तव में यहूदी कानून और रोमन कानून में। जोसेफस का कहना है कि किसी महिला की गवाही को उनके लिंग की गंभीरता और गुस्ताखी के कारण स्वीकार नहीं किया जाना चाहिए।

ल्यूक को भी संपूर्ण ज्ञान था, जैसा कि हम ल्यूक के सुसमाचार के अध्याय 1 और श्लोक 3 में देखते हैं। कुछ अनुवाद कहते हैं, मैंने सावधानीपूर्वक जांच की। आप इसका अनुवाद भी कर सकते हैं, मुझे इसकी पूरी जानकारी थी।

खैर, ल्यूक को यह संपूर्ण ज्ञान कब प्राप्त हो सकता था, या वह कब जाँच कर सकता था? सर्वश्रेष्ठ हेलेनिस्टिक इतिहासकार वास्तव में चीजों की जांच करना पसंद करते थे। वे उन दृश्यों में जाना पसंद करते थे जहां चीजें घटित होती थीं। मुझे नहीं लगता कि ल्यूक संभवतः गलील के कई हिस्सों में गया होगा।

शायद पहली सदी के 60 के दशक में यह उसके लिए सुरक्षित नहीं होता यदि वह एक गैर-यहूदी होता, और शायद तब भी नहीं जब वह एक विशेष रूप से ग्रीक भाषी प्रवासी यहूदी होता जो यह साबित नहीं कर पाता कि वह पूरी तरह से यहूदी था। लेकिन किसी भी मामले में, ऐसा प्रतीत होता है कि ल्यूक कई अन्य स्थानों पर गया था और कम से कम वहां मौजूद लोगों से जानकारी एकत्र की थी। तो हम यह कैसे जानते हैं? खैर, ल्यूक के बारे में क्या ख्याल है? वह उन स्रोतों की जाँच कब कर सकता था? खैर, हम कथा याद रखें।

अध्याय 16 से 28 तक बहुत सारे 'वी' हैं। और 'वी' कथा के एक भाग के बारे में, हम पहले ही 'वी' कथा के साक्ष्य के बारे में बात कर चुके हैं, एक प्रत्यक्षदर्शी के पास जाकर। लेकिन वी कथा में यहूदिया में पॉल के साथ बिताए गए दो साल तक शामिल हैं।

2427 का कहना है कि पॉल को दो साल तक कैसरिया में रोमन हिरासत में रखा गया था। और जब हम पहले से ही उसके साथ थे, और जब पॉल अधिनियम 27, 1 और 2 में रोम जाने के लिए निकलता है, तब भी हम उसके साथ होते हैं। तो, इससे हमें पता चलता है कि ल्यूक ने यहूदिया में काफी समय बिताया था।

संभवतः इसका अधिकांश भाग कैसरिया में यहूदी तट पर बिताया गया था, लेकिन वहां एक बड़ी यहूदी आबादी थी, एक बड़ी यहूदी ईसाई आबादी थी। उनकी मुलाकात एक पुराने शिष्य मनसिन से हुई, जो शुरुआती समय में वापस चला गया था। उनकी मेजबानी फिलिप द इवांजेलिस्ट ने की थी, जो चर्च में शुरुआती समय से ही आस्तिक थे।

उनकी मुलाकात प्रभु के भाई जेम्स से हुई। और जहां तक पॉल के बारे में कहानियों का सवाल है, वह वहां दो साल तक था। मेरा मतलब है, वह पॉल के साथ काफी समय से रहा है।

जेल में बंद लोगों को मुलाकातियों की अनुमति थी। वास्तव में, कभी-कभी उन्हें रिश्वत देनी पड़ती थी। लेकिन इस मामले में, प्रेरितों के काम अध्याय 24 में, फेलिक्स, इस भ्रष्ट गवर्नर ने भी आदेश दिया कि लोग जब तक चाहें उससे मिल सकते थे और उसके पास चीजें ला सकते थे, और उसकी देखभाल कर सकते थे।

इसलिए, ल्यूक के पास इन कहानियों को सुनने के लिए पॉल के साथ काफी समय था, अगर उसे उनमें कोई दिलचस्पी थी। और वह पॉल की कहानियों को अच्छी तरह से जानता होगा। और फिर प्रेरितों के काम की पुस्तक की अंतिम तिमाही के लिए, वह वास्तव में अधिकांश चीजों के लिए वहाँ है।

अंत में, ल्यूक उस चीज़ की अपील करता है जो चर्च में पहले से ही सामान्य ज्ञान थी। पद 4, ताकि जो बातें तुम्हें सिखाई गई हैं, उनकी निश्चितता तुम जान लो। खैर, आपको शायद याद होगा कि इस वीडियो के पिछले सत्र में, मैं पुरावनस्पति विज्ञान पर व्याख्यान दे रहा था।

नहीं, दरअसल आपको वह याद नहीं होगा, क्योंकि मैं वह नहीं कर रहा था। आम तौर पर आप ऐसी बातें नहीं बनाते हैं जो आपके श्रोता पहले से ही जो जानते हैं उसका खंडन करते हैं और फिर इसके बारे में उनके ज्ञान की दुहाई देते हैं। इसलिए, 2,000 साल बाद, हम वापस जाकर ल्यूक का साक्षात्कार नहीं कर सकते।

हम निश्चित रूप से उन लोगों का साक्षात्कार नहीं ले सकते जिनका ल्यूक ने साक्षात्कार लिया था। हम केवल आभारी हो सकते हैं कि ल्यूक ने उनका साक्षात्कार लिया और मेरे गवाहों के लिए यह सामग्री दी। लेकिन हम इसके लिए आभारी हो सकते हैं कि ल्यूक ने थियोफिलस के इस ज्ञान की अपील की।

और इसलिए, ल्यूक अपने काम को उस चीज़ की पुष्टि के रूप में देखता है जो पहले से ही ज्ञात थी। यह वह जानकारी थी जो ल्यूक के लिखने से पहले ज्ञात थी। यह वैसा ही है जैसे पॉल अपने श्रोताओं को उन चमत्कारों के ज्ञान का हवाला देता है जो उसके माध्यम से किए गए थे, 2 कुरिन्थियों 12।

वह कहता है, तुम जानते हो, कि जब मैं तुम्हारे बीच में था, तो तुम ने प्रेरित के लक्षण देखे थे। संभावना यह है कि इसका मतलब है कि उन्होंने वास्तव में उन्हें देखा था या वह उससे अपील नहीं कर पाएंगे। गॉस्पेल के संबंध में अन्य साक्ष्य भी हैं।

चर्च के केंद्र में बाद की बहसों गॉस्पेल में गायब हैं। ल्यूक को ल्यूक के सुसमाचार और अधिनियमों को समानांतर करना पसंद है। खैर, अधिनियमों के अध्याय 15 में एक बड़ा मुद्दा, सन् 50 के आसपास, पहली शताब्दी के मध्य के आसपास, एक बड़ा विभाजनकारी मुद्दा यह है कि क्या अन्यजातियों का खतना किया जाना चाहिए या नहीं।

और फिर भी हम ल्यूक को उस सुसमाचार में पढ़ते हुए नहीं पाते हैं जहाँ यीशु ने इस बारे में कोई कहा है कि उन्हें खतना करने की आवश्यकता है या नहीं। मेरा मतलब है, आपने सोचा होगा कि यदि लोग बेतरतीब ढंग से यीशु के लिए बातें बना रहे होते, तो आपके पास ऐसे लोग होते जो

कहते कि यीशु ने खतना कराने के लिए कहा था, गैर-यहूदी, या यीशु कहते होंगे कि अन्यजातियों को खतना करने की ज़रूरत नहीं है। लेकिन आपके पास उनमें से कुछ भी नहीं है, और ल्यूक में आपके पास उनमें से कुछ भी नहीं है।

पॉल, न्यू टेस्टामेंट का सबसे पहला लेखक, कम से कम उस सामान्य डेटिंग के अनुसार जो इतिहास में इस समय हममें से अधिकांश लोग उपयोग करते हैं, पॉल, न्यू टेस्टामेंट का सबसे पहला लेखक, कभी-कभी ल्यूक के गॉस्पेल सहित, सिनोटिक्स में हमारे पास जो कुछ भी है, उसे प्रमाणित करता है। पुनरुत्थान परंपरा और उसके गवाह, प्रभु का भोज पारित किया जा रहा है, ठीक है, यह ल्यूक 22 और मार्क 14 और 1 कुरिन्थियों 11 में बहुत समान है। इसका सार निश्चित रूप से सहमत है।

तलाक की कहावत, 1 कुरिन्थियों 7, जहां पॉल विशेष रूप से जो कुछ वह कहता है और जो यीशु ने कहा, में अंतर करता है, यीशु से असहमत नहीं है, बस इसे एक नई स्थिति के लिए योग्य बनाता है, लेकिन वह उस स्थिति के लिए यीशु के लिए कुछ भी आविष्कार नहीं करता है। पॉल की अंतिम समय की शिक्षाएँ यीशु की अंतिम समय की शिक्षाओं की बहुत प्रतिध्वनि करती हैं, और मैंने यह तर्क दिया है कि यह कहीं और अधिक विस्तार से छपा है। मैं यहाँ उस पर नहीं जाऊँगा।

संभवतः यीशु की कुछ नीतियाँ भी। यदि लेखक स्वतंत्र रूप से कहानियों का आविष्कार कर रहे होते, तो हमारे पास सिनोटिक गॉस्पेल नहीं होते। हमारे पास ओवरलैप की डिग्री नहीं होगी, हालांकि ल्यूक कई स्रोतों का उपयोग करता है, न कि केवल उन स्रोतों का जिन्हें हमने आज भी हमारे लिए संरक्षित किया है, जो कि उनके द्वारा उल्लेखित कई स्रोतों का केवल एक छोटा सा हिस्सा है।

खैर, अब मैं विशेष रूप से एक्ट्स पर नजर डालने जा रहा हूँ। याद रखें, मैंने कहा था कि एक्ट्स में बाहरी इतिहास के साथ उपन्यास में मिलने वाली तुलना से कहीं अधिक समानताएँ हैं। ऐसा कोई उपन्यास नहीं है जिसकी तुलना इससे की जा सके, और चार्ल्स टैलबर्ट और अन्य लोगों ने इस ओर ध्यान दिलाया है।

अधिनियम 13-28 में बाहरी इतिहास के साथ अधिनियमों का पत्राचार, जब मैं कहता हूँ कोई उपन्यास नहीं, कोई प्राचीन उपन्यास नहीं। आपके पास सेर्गी पोली का सत्यापन है, सर्जियस पॉलस के परिवार को जाना जाता है, और ल्यूक को वैसे भी गवर्नर का नाम बनाने के लिए बहुत दुस्साहस करना पड़ा होगा। 1406 में इकोनियम जातीय रूप से फ्रीजियन था।

अधिकांश कस्बों के विपरीत, लिस्ट्रा ने अपनी स्थानीय भाषा को संरक्षित रखा, 1411। ज़ीउस और हर्मीस को स्थानीय शिलालेखों में जोड़ा गया था, जैसे लोगों ने सोचा था कि बरनबास और पॉल उसी क्षेत्र में ज़ीउस और हर्मीस थे, 1412। दक्षिण से, आप लिस्ट्रा से पहले डर्बे आते हैं, 1601.

एशिया माइनर के आंतरिक भाग के बारे में कुछ भी जानने का एकमात्र तरीका यह था कि आप वहाँ जाएं। और ल्यूक संभवतः स्वयं वहाँ नहीं गया था, लेकिन उसके पास एक स्रोत था जो वहाँ

गया था। थेस्सालोनिका, वे एक स्वतंत्र शहर थे, और इसलिए उनकी आबादी को डेमोस कहा जाता है।

और उनके अधिकारियों को, मैसेडोनिया में अन्य जगहों की तरह, लेकिन केवल मैसेडोनिया में ही, पॉलीटार्क कहा जाता था। उसे यह अधिकार अध्याय 17 में मिलता है। अध्याय 18, श्लोक 2 में, क्लॉडियस के निष्कासन की बात करते हुए, यह क्लॉडियस के निष्कासन के ज्ञात समय पर फिट बैठता है।

अधिकांश विद्वान सोचते हैं, और मैंने ब्यूरेल के विश्वकोश के लिए इस पर लिखा है, जो उनके कार्यों में से एक है, कि तारीख वर्ष 49 के आसपास है। इसके बारे में कुछ बहस है, लेकिन यह बहुमत का दृष्टिकोण है। कॉलिन हेमर के पास वास्तव में इस सामग्री के 100, 200 पृष्ठ हैं।

मैं आपको केवल उन प्रकार के पत्राचारों का एक संक्षिप्त सारांश दे रहा हूँ जो उपलब्ध हैं। अध्याय 19, श्लोक 35 में, इफिसुस में स्थानीय स्तर पर मुख्य अधिकारी का शीर्षक ग्रोमेटस था। ठीक है, एक गाँव में, आप जानते हैं, एक ग्रोमेटस आता है, वह सिर्फ एक गाँव का मुंशी होता है जो दस्तावेजों को निष्पादित करता है।

परन्तु इफिसुस में, नगर लिपिक ही मुख्य अधिकारी था। अब, आर्टेमिस एक देवी थी, कहा जाता है कि वह देवी है। और इसलिए आम तौर पर आप उसके बारे में हे-द-आह, देवी के रूप में बात करेंगे।

यदि यह अपोलो जैसा कोई पुरुष देवता होता, तो आप कहते कि वही-द-एज़, वह देवता है जिसके बारे में वे बात कर रहे थे। लेकिन कभी-कभी इफिसस के स्थानीय शिलालेखों में, इफिसियन आर्टेमिस को हे-द-अस के रूप में वर्णित किया गया है। और वह स्थानीय उपयोग कई बार अधिनियम 19 में पाया जाता है, जिससे ऐसा लगता है कि रिपोर्ट किसी ऐसे व्यक्ति से आई है जो इफिसस में था।

खैर, यह कोई बड़ी बात नहीं है क्योंकि बहुत सारे लोग इफिसस की यात्रा करते हैं, लेकिन फिर भी हम इसे इफिसस के बाहर ज्यादा नहीं पाते हैं। 1938, रोमन एशिया के विभिन्न जिलों में गवर्नर द्वारा अदालतें आयोजित करने की प्रथा। अध्याय 20 में श्लोक 4 में, बेरिया के नाम का रूप, बेरियास, यह रूप स्थानीय शिलालेखों में फिट बैठता है।

अध्याय 21, छंद 31, 35, और 40, पुरातत्व पोर्टा सेंटोनिया के लोगों के संदर्भ में ल्यूक के मंदिर की स्थलाकृति की पुष्टि करता है, सैनिक सीढ़ियों से नीचे उतर रहे हैं और पॉल को बाहरी आंगन में भीड़ से बाहर खींच रहे हैं। क्लॉडियस लिसियास, ठीक है, ल्यूक इस पर कोई बात नहीं करता है, लेकिन लिसियास, वह एक यूनानी है, लेकिन उसने रोमन नागरिकता प्राप्त कर ली है और उसने पिछले रोमन सम्राट का नाम ले लिया है, रोमन सम्राट जिसके तहत उसे नागरिकता प्राप्त हुई थी। खैर, यह हालिया नागरिकता अधिग्रहण पर फिट बैठता है।

यह इस तथ्य पर भी फिट बैठता है कि क्लॉडियस अपने शासनकाल के दौरान रोमन नागरिकता काफी हद तक बेच रहा था। उसके शासनकाल के अंत में नागरिकता भी सस्ती थी, शायद यही

कारण है कि क्लॉडियस लिसियास पॉल से कहता है, ठीक है, मैंने अपनी नागरिकता के लिए बहुत अधिक भुगतान किया है। जैसे, आपने अपने लिए कितना भुगतान किया? और फिर पॉल कहते हैं, मैं एक नागरिक के रूप में पैदा हुआ था।

अनन्या उस समय सही महायाजक है। फ़ेलिक्स का कार्यकाल कथा तिथि के अनुरूप है। इसके अलावा, समय के साथ फेलिक्स की तीन अलग-अलग पत्नियाँ थीं, लेकिन इस समय उसकी जो पत्नी थी, वह एक यहूदी राजकुमारी डूसिला थी।

वह अग्रिप्पा द्वितीय और बर्निस की बहन थी। वह वही थी जिसकी शादी इस समय फेलिक्स से हुई थी। फिर, यह कोई ऐसी चीज़ नहीं है जिस पर कोई उपन्यासकार वापस जाकर शोध करेगा।

जेरूसलम और कैसरिया के बीच एंटीपैट्रिस सही पड़ाव है। पुरातत्वविदों ने अब वहां की सड़क का पता लगा लिया है। यह अन्यजातियों के बीच पैदल सेना को राहत देने और उन्हें वापस भेजने के लिए भी सही जगह है, जबकि घुड़सवार कैसरिया की ओर बढ़ते हैं।

जब पॉल यहूदिया के गवर्नर फेलिक्स के सामने जाता है, तो फेलिक्स पूछता है कि वह किस प्रांत से है। खैर, वह सिलिसिया से है। और तभी फ़ेलिक्स कहता है, ठीक है, ठीक है, बेहतर होगा कि मैं इस मामले को स्वयं ही आजमाऊँ।

मैं इसका उल्लेख नहीं करने जा रहा हूँ क्योंकि मैं अपने ही वरिष्ठ को परेशान करूँगा जो चाहता है कि मैं स्वयं इसकी देखभाल करूँ। इस समय के दौरान सीरिया का प्रांत शामिल हो गया था और कुछ समय के लिए सिलिसिया के साथ जुड़ गया था। तो इसका मतलब यह है कि किलिकिया का गवर्नर, फेलिक्स का प्रत्यक्ष श्रेष्ठ, वह भी था जिसने किलिकिया पर शासन किया था।

इसलिए, उसने पॉल को मुकदमा चलाने के लिए अपने क्षेत्र में वापस नहीं भेजा। इसके अलावा, 2427 में पोर्सियस फेस्टस का आगमन। खैर, यह ठीक उसी समय आया था जैसा अधिनियमों में दर्शाया गया है।

पोर्सियस फेस्टस वास्तव में शायद बहुत लंबे समय तक पद पर नहीं था, लेकिन वह चरित्र के अनुसार काम करता है। जिस तरह वह अधिनियमों में प्रकट होता है उसी तरह वह जोसेफस में भी प्रकट होता है। मैंने तर्क दिया है कि अग्रिप्पा। एक्ट्स में उसी तरह कार्य करता है जैसा वह जोसेफस में करता है।

और अग्रिप्पा ॥ और बर्निस को कोई बोलने वाला भाग नहीं मिलता है, लेकिन वे काफी हद तक उसी तरह से कार्य करते हैं जिस तरह से हम जोसेफस में उनके कार्य को देखते हैं। ठीक इसी समय बर्निस अपने भाई अग्रिप्पा द्वितीय के साथ थी। अब बर्निस की किसी समय शादी हो चुकी थी, लेकिन उसकी शादी टूट गई और वह अपने भाई के साथ रहने के लिए वापस चली गई।

इस समय वह अपने भाई के साथ थी। मेरा मतलब है, एक उपन्यासकार इसे इन चीजों के सटीक वर्षों तक नहीं पहुंचा पाएगा। इसके अलावा, अग्रिप्पा और बर्निस नए अधिकारियों से मिलने के

लिए जाने जाते थे, इसलिए इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि वे फ्रेस्तुस से उसका कार्यालय प्राप्त करने के तुरंत बाद मिलने आए, और अपने कार्यालय के कर्तव्यों को भी ग्रहण किया।

अधिनियम 27.1 से 28.15 में, पॉल की रोम यात्रा, यात्रा कार्यक्रम, मौसम की स्थिति और नाविकों की गतिविधियों को अक्सर छोटे से छोटे विवरण में सही किया गया है, जिसमें जहाज को कहां उड़ाया जा रहा था, वहां पहुंचने में कितने दिन लगे, यह भी शामिल है। और इसी तरह। इसका अध्ययन 19वीं शताब्दी में एक नाविक द्वारा किया गया था जो इस प्रकार के कुछ तूफानों में था। एडॉल्फ वॉन हार्नेक, जिन्हें 20वीं सदी की शुरुआत में एक उदार विद्वान के रूप में जाना जाता था, एडॉल्फ वॉन हार्नेक का कहना है कि पॉल के पत्र अधिनियमों की पुष्टि करते हैं।

वह चमत्कारों को छोड़कर, अधिनियमों से अत्यधिक प्रभावित था, क्योंकि वह चमत्कारों में विश्वास नहीं करता था। वह एक और कहानी है। लेकिन पॉल के पत्र अधिनियमों की पुष्टि करते हैं, और वह इसके 39 उदाहरण देते हैं।

यहाँ उनमें से कुछ हैं। यरूशलेम सुसमाचार का आरंभिक स्थान है। पॉल इसकी पुष्टि करता है।

अन्य यहूदियों द्वारा यहूदी चर्चों का उत्पीड़न, आपके पास 1 थिस्सलुनीकियों 2 में है। यहूदी चर्चों ने कानून का पालन किया, गलातियों 2, पद 12। पॉल को आश्चर्य हुआ कि जब वह यरूशलेम वापस जा रहा था तो यरूशलेम चर्च उसे कैसे स्वीकार करेगा। वह रोमियों 15.31 में इसके बारे में बात करता है। बारह ने यरूशलेम चर्च का नेतृत्व किया, गलातियों 1, 1 कुरिन्थियों 15।

बरनबास एक प्रेरित था, लेकिन बारह में से एक नहीं, 1 कुरिन्थियों 9 और फिर 15। बारह में से, पतरस और यूहन्ना विशेष रूप से नेता थे। आप इसे गलातियों 2.9 में देखते हैं, ठीक वैसे ही जैसे आप इसे प्रेरितों के काम की पुस्तक में देखते हैं।

पीटर प्रमुख नेता हैं। आप इसे गलातियों में देखते हैं, जैसा कि आप इसे प्रेरितों के काम में देखते हैं। पीटर ने यात्राएँ कीं।

आप इसे गलातियों में देखते हैं, जैसा कि आप इसे प्रेरितों के काम में देखते हैं। प्रभु के भाई, बारह में से नहीं हैं, लेकिन वे प्रारंभिक चर्च में प्रमुख हैं। आप देख सकते हैं कि 1 कुरिन्थियों 9 में। जेम्स प्रभु के भाइयों के समूह का प्रमुख है और एक महत्वपूर्ण नेता है, 1 कुरिन्थियों 15 और गलातियों 2 में। बरनबास अपने शुरुआती मिशन में पॉल का मुख्य सहकर्मी था।

आप इसे गलातियों 2 और 1 कुरिन्थियों 9 में देखते हैं। यह उन समुदायों में जाना जाता था। उसने स्पष्ट रूप से उसके बारे में बात की थी, इसलिए आश्चर्य की बात नहीं कि ल्यूक को भी उसके बारे में पता होगा। मार्क बरनबास के साथ घनिष्ठ रूप से जुड़ा हुआ था।

हमें पॉलीन पत्राचार में पता चलता है कि वास्तव में मार्क बरनबास का रिश्तेदार था। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि वह उसके लिए खड़ा रहेगा। सिलास पॉल का साथी था और टिमोथी भी बाद के मिशन में उसका साथी था क्योंकि वे एजियन क्षेत्र में आगे बढ़ रहे थे।

वहाँ, तीमुथियुस एक अधीनस्थ है। सिलास एक सहकर्मी की तरह अधिक लगता है। टिमोथी एक अधीनस्थ है, हालाँकि पॉल समूह का मुख्य नेता है।

आपके पास जेरूसलम के कई सदस्य हैं, शुरुआती दौर में जेरूसलम चर्च जहाँ 500 से अधिक लोगों ने एक बार में यीशु को जीवित देखा था। इसलिए उन्होंने चर्च के लिए बहुत अच्छी शुरुआत की, हालाँकि उनमें से बहुत से गैलीलियन थे और वापस चले गए होंगे। बपतिस्मा का उपयोग दीक्षा के लिए किया जा रहा है, आपके पास वह दोनों में है।

आपके पास प्रेरितों के साथ जुड़े हुए चिन्ह और चमत्कार हैं। वह दोनों में है। आपने पॉल को यह स्वीकार करते हुए देखा है कि उसने ईसाइयों को सताया, गलातियों 1, 1 कुरिन्थियों 15, फिलिप्पियों 3। गलातियों 2 में पॉल पतरस के बराबर या उसके समकक्ष है। प्रभु के रहस्योद्घाटन से दमिश्क के निकट पॉल परिवर्तित हो गया, गलातियों 1, 1 कुरिन्थियों 15.

पॉल दीवार से एक टोकरी में दमिश्क से भाग रहा है, 2 कुरिन्थियों 11. पॉल बाद में यरूशलेम गया, गलातियों 1. पॉल ने यरूशलेम में सेवा की, रोमियों 15. अधिनियम 13 और 14 में पॉल के मंत्रालय के शहर 2 तीमुथियुस 3.11 में हमारे पास मौजूद हैं। इसके अलावा, यदि आप दक्षिण गलाटियन सिद्धांत को लेते हैं, जो कि अधिकांश विद्वान करते हैं, तो कुछ अन्य विद्वान जो कहते हैं उसके विपरीत है, लेकिन मैंने सामग्री के माध्यम से काम किया है, अधिकांश विद्वानों और एशिया माइनर पर काम करने वाले क्लासिकिस्टों के मजबूत बहुमत पर भी काम किया है। इस बात से सहमत हैं कि पॉल ने दक्षिण गलातिया में सेवा की ताकि गलाटियन अधिनियमों के साथ भी मेल खा सकें।

अधिनियम 13:38, और 39 विश्वास द्वारा औचित्य के बारे में पॉल की शिक्षा में फिट बैठते हैं। खैर, हार्नेक ने इस प्रकार की बातों की ओर इशारा किया, लेकिन यह सिर्फ हार्नेक का मामला नहीं है। जेबीएल लेख में थॉमस कैंपबेल ने कहा कि पॉल का कालक्रम जो हमें उनके पत्रों से मिलता है, वह कालक्रम, वह क्रम जो हमारे पास अधिनियमों की पुस्तक में है, से बहुत मेल खाता है।

अब, इनमें से कुछ चीजें सिर्फ सामान्य ज्ञान हैं क्योंकि यदि आप यात्रा कर रहे हैं, तो आप रोम नहीं जाएंगे और फिर उनके बीच के किसी शहर में वापस नहीं आएंगे। आम तौर पर, आप क्रम में चलते हैं, लेकिन पत्राचार वास्तव में उल्लेखनीय है। उत्पीड़न, गलातियों 1. परिवर्तन, गलातियों 1. पॉल अरब जाता है।

वह भाग अधिनियमों में नहीं है, हालाँकि नबातियन वहाँ के आसपास के क्षेत्र में थे, और हम जानते हैं कि दमिश्क के एथनार्क के साथ 2 कुरिन्थियों 11 में उन्होंने जो कहा है, उसके कारण उनका नबातियन के साथ कुछ संघर्ष हुआ था, लेकिन हमारे पास ऐसा नहीं है अधिनियम। वह दमिश्क जाता है। वह यरूशलेम जाता है।

वह आगे सीरिया और सिलिसिया जाता है। 14 वर्ष बाद वह पुनः यरूशलेम वापस आये। वह अन्ताकिया जाता है।

वह फिलिप्पी जाता है। वह थिस्सलुनीके जाता है। वह एथेंस जाता है।

इसका उल्लेख 1 थिस्सलुनिकियों 3 में है। वह कोरिंथ जाता है। वह इफिसुस को जाता है। वह त्रोआस को जाता है।

वह मैसेडोनिया जाता है। वह कोरिंथ वापस आता है। वह यरूशलेम जाता है, और वह रोम जाता है।

अब, हम यह उम्मीद नहीं कर सकते कि एक स्रोत में जो कुछ भी घटित होता है वह दूसरे स्रोत में प्रमाणित हो। पॉल के पत्र कभी-कभार आने वाले पत्र हैं। वह अपने जीवन की जीवनी नहीं दे रहे हैं, लेकिन पत्राचार इस कारण से और भी उल्लेखनीय हैं।

अब, जो आपत्ति उठाई गई है, फ़िलहाउर ने ल्यूक के गैर-पॉलिन धर्मशास्त्र की आलोचना की है। खैर, हर कोई इस बात से सहमत है कि ल्यूक ने भाषणों को अपने शब्दों में लिखा था। ल्यूक के पास कुछ पॉलीन वाक्यांश हैं, लेकिन अधिकांश भाग के लिए, ल्यूक का लेखन उसके अपने शब्दों में है।

दरअसल, जैसा कि हम बाद में देखेंगे, कुछ भाषण वास्तव में, शायद, पॉल के अपने शब्दों के करीब हैं, जैसे अधिनियम 20 में। लेकिन छात्रों का जोर उनके शिक्षकों के जोर से भिन्न हो सकता है। मेरा मतलब है, मैं हमेशा आशा करता हूँ कि मेरे शिक्षक, जिनसे मैं कुछ बिंदुओं पर असहमत हूँ, उन्हें अभी भी एहसास है कि मैं उनका कितना सम्मान करता हूँ।

मैंने उन्हें पुस्तकें इत्यादि समर्पित की हैं, लेकिन हम हमेशा हर बिंदु पर सहमत नहीं होते हैं। मैंने ईपी सैंडर्स के साथ अध्ययन किया। मैंने अपना ऐतिहासिक जीसस ऑफ द गॉस्पेल्स ईपी सैंडर्स और जिम चार्ल्सवर्थ को समर्पित किया, लेकिन एड जानता है कि मैं हर बिंदु पर उससे सहमत नहीं हूँ।

मैंने अपनी जॉन टिप्पणी डी. मूडी स्मिथ को समर्पित की, जो जॉन के सुसमाचार के अध्ययन में मेरे डॉक्टरेट सलाहकार थे। हम हर मुद्दे पर सहमत नहीं हैं। वह निश्चित रूप से जानता है कि मैं उसका समर्थन करता हूँ और उसकी सराहना करता हूँ और फिर भी उससे सलाह मांगता हूँ।

लेकिन किसी भी मामले में, छात्र हमेशा अपने शिक्षकों से हर बात पर सहमत नहीं होते हैं। निश्चित रूप से, उनका जोर उनके शिक्षकों से भिन्न हो सकता है। इसके अलावा, अधिनियम 17 में प्राकृतिक धर्मशास्त्र, जिसे लोगों ने रोमन 1 में प्राकृतिक धर्मशास्त्र के साथ तुलना करने की कोशिश की है, यदि आप एक नए नियम के विद्वान हैं और आप थोड़ा अलग जोर देने की कोशिश कर रहे हैं, हाँ, बढ़िया।

लेकिन यदि आप एक क्लासिकिस्ट हैं और आप इस दृष्टिकोण से आ रहे हैं कि प्राचीन दार्शनिकों के बीच प्राकृतिक धर्मशास्त्र सामान्य रूप से कैसा दिखता था, तो वास्तव में अधिनियम 17 और रोमन 1 काफी हद तक समान लगते हैं। और निःसंदेह, वे उस समय जो उपलब्ध था उसके व्यापक ढांचे में फिट बैठते हैं। अधिनियम 9 और श्लोक 20, यीशु को ईश्वर के पुत्र के रूप में

बोलते हैं, और 13, 38, और 39, जैसा कि हमने पहले उल्लेख किया है, औचित्य की बात करते हैं।

अधिनियम 20 में ऐसे शब्द भी शामिल हैं जो पॉल के अपने शब्दों के बहुत करीब हैं। खैर, अधिनियम 20 में क्यों? खैर, हम वहां थे . जब भाषण दिया गया तो ल्यूक वहां मौजूद थे।

फ़िलहाउर ने जो प्रमुख समस्या बताई वह यह है कि पॉल कानून का पालन करता है, लेकिन यह फ़िलहाउर की पत्रियों के धार्मिक गलत अर्थ को दर्शाता है, जैसा कि अब अक्सर देखा जाता है। ईपी सैंडर्स और अन्य ने इसे सामने लाया है, लेकिन सिर्फ ईपी सैंडर्स ने नहीं। मेरा मतलब है, लोग उनसे असहमत होंगे।

अधिकांश विद्वान आज इस बात से सहमत हैं कि पॉल उस तरह से कानून के खिलाफ नहीं था जैसा कि फ़िलहाउर ने सोचा होगा। इसके अलावा 1 कुरिन्थियों 9, 19 से 23 में, पॉल कहता है कि वह सभी लोगों के लिए सब कुछ बन गया। वह उन लोगों के लिए कानून के अधीन नहीं था जो कानून के अधीन नहीं थे, परन्तु वह स्वयं परमेश्वर की व्यवस्था के अधीन था।

और उस ने कहा, मैं यूनानियोंके लिथे यूनानी, और यहूदियोंके लिथे यहूदी हो गया हूं। खैर, यह उसके लिए काफी आसान था। वह उनकी अपनी संस्कृति थी।

इसलिए, यह आश्चर्य की बात नहीं होनी चाहिए अगर पॉल कभी-कभी अपनी संस्कृति को समायोजित करेगा, जैसे प्रेरितों के काम अध्याय 16 में तीमुथियुस का खतना करना, या अधिनियम 18.18 में प्रतिज्ञा के कारण उसका सिर मुंडवाना, इत्यादि। वास्तव में, पॉल ने अपने लेखन में कभी-कभी चीजों को इस तरह से समायोजित किया जिसका ल्यूक वर्णन भी नहीं करता है। पॉल ने इसके बारे में कई बार बात की, 39 कोड़े मारे गए।

खैर, अगर उसने आराधनालय से हटने का फैसला किया होता, तो वह कह सकता था, ठीक है, मैं एक रोमन नागरिक हूं। मुझे इसके लिए समर्पण नहीं करना है. मैंने बस अपने यहूदी संबंधों को अस्वीकार कर दिया, और वे उसे हरा नहीं सकते थे।

लेकिन पॉल ने ऐसा नहीं किया. उन्होंने अपने लोगों के साथ पहचान बनाई, और इसलिए मुझे लगता है कि ल्यूक का यह चित्रण फिट बैठता है। लुकान इतिहासलेखन पर कुछ अवलोकन।

अब, यह सिर्फ मेरे दृष्टिकोण से नहीं कहा जा रहा है। यह एक सामान्य दृष्टिकोण है जहां संभवतः ल्यूक-एक्ट्स पर अधिकांश विद्वान खड़े हैं। ल्यूक की सटीकता की चुनौतियाँ उन विद्वानों के बीच सामने आती हैं जहाँ हम उनसे सबसे अधिक उम्मीद करते हैं।

अधिनियम 5.36 और 37 में बंद दरवाजों के पीछे भाषण उन प्रमुख स्थानों में से एक है जहां लोग सवाल उठाते हैं। प्रेरितों के काम अध्याय 25, श्लोक 13 और उसके बाद में आपका बंद दरवाजे के पीछे का भाषण भी है। लेकिन वह सबसे सटीक है जहां हम उसका परीक्षण कर सकते हैं, जहां हम एक प्राचीन इतिहासकार से अपेक्षा करेंगे।

छोटी कहानियों में सटीक और विस्तृत। जब भी यह पॉल के पत्रों में उपलब्ध होता है तो कालानुक्रमिक क्रम में फिट बैठता है। सुसमाचार में मार्क के सार और मैथ्यू के साथ साझा की गई सामग्री को संरक्षित करता है।

तो, यह फिट बैठता है। भाषणों में सबसे ज्यादा सवाल कहां उठाए गए हैं। पुस्तक की लगभग एक-चौथाई सामग्री में, विद्वान भाषणों के सटीक प्रतिशत पर भिन्न हैं क्योंकि यह इस पर निर्भर करता है कि क्या आप कथा संदर्भ शामिल करते हैं और क्या आप अन्य वार्तालाप इत्यादि शामिल करते हैं।

लेकिन यह पुस्तक की सामग्री का लगभग एक-चौथाई हिस्सा है। कई भाषण क्षमाप्रार्थी भाषण हैं। वे आस्था की रक्षा कर रहे हैं।

अधिनियम अध्याय 7 में यहूदी आरोपों का उत्तर देना। अधिनियम 22 में भीड़ के सामने पॉल के बचाव भाषण और अधिनियम 24, 25 संक्षेप में, और 26 राज्यपालों के सामने। अन्य इंजीलवादी हैं जैसे अधिनियम 13 में आराधनालय उपदेश जहां पॉल धर्मग्रंथों की अपील करता है या पॉल प्रकृति की अपील करता है जब वह अधिनियम 14, छंद 15 से 17 में किसानों से बात कर रहा होता है या पॉल ग्रीक कवियों से अपील करता है और कुछ रूपांकनों का उपयोग करता है जो पुराने नियम के धर्मशास्त्र के बीच साझा किए गए थे और यूनानी दार्शनिकों ने अधिनियम 17:22 से 31 में अपने भाषण में कहा। वे सुसमाचार प्रचार भाषण हैं।

खैर, जैसा कि हमने पहले उल्लेख किया है, इतिहासकार अक्सर भाषणों का उपयोग करते हैं। वे अक्सर संभावित भाषण घटनाओं को संक्षेप में प्रस्तुत करने के लिए उनका उपयोग करते थे। यदि यह ज्ञात हो कि कोई भाषण किसी अवसर पर दिया गया है या निश्चित रूप से कोई भाषण किसी अवसर पर दिया गया है, तो एक इतिहासकार एक ऐसा भाषण लिखेगा जो जितना संभव हो उतना करीब होगा जो उन्होंने सोचा था कि उस अवसर पर दिया गया होगा, कभी-कभी जोसेफस को छोड़कर दिखावा करना चाहते हैं।

लेकिन आम तौर पर उन्होंने यही किया। विभिन्न दृष्टिकोणों को संप्रेषित करने के लिए, कभी-कभी वे वहां अभ्यास करते थे जिसे प्रोसोपोपोइया कहा जाता था, और फिर मैं यहां अपना दृष्टिकोण स्पष्ट नहीं कर रहा हूं, मैं आपको केवल सामान्य विचार दे रहा हूं जो विद्वानों ने व्यक्त किए हैं। प्रोसोपोपोइया जहां आप चरित्र में भाषण लिखेंगे।

ठीक है, यहाँ कोई विरोधी जनरलों के बारे में लिख रहा है। वे शायद बहुत कुछ जानते होंगे कि एक विशेष रोमन जनरल ने क्या कहा था, लेकिन रोमन जनरल एक कार्थाजियन जनरल के खिलाफ जा रहे थे। इसका कोई जीवित चश्मदीद गवाह नहीं है, जिस तक रोमन इतिहासकारों की पहुंच हो।

तो, एक रोमन इतिहासकार का कहना है, अच्छा, हम उसके बारे में जो कुछ जानते हैं, उसे देखते हुए, स्थिति के बारे में हम जो जानते हैं, उसे देखते हुए उसने क्या कहा होगा? और इसलिए, उसकी आपूर्ति करने का प्रयास करता है। और फिर इस तरह आपके पास विरोधाभासी भाषण

होते हैं। यह एक ऐसा तरीका था जिसमें इतिहासकारों ने चीजों को, विवरणों को भरने और आख्यानो को यथासंभव ऐतिहासिक रूप से सटीकता से प्रस्तुत करने का प्रयास किया।

लेकिन भाषणों में उन्हें अधिक स्वतंत्रता थी जहां वे अक्सर अनुमान लगाने का काम करते थे। यह घटनाओं पर एक परिप्रेक्ष्य प्रदान करना था। खैर, भाषण कितने सटीक थे? यह इस पर निर्भर करता है कि उन्हें किसने लिखा और उनके पास कितनी जानकारी थी।

मसाडा में जोसेफस के भाषण को अक्सर मनगढ़ंत भाषण के मामले के रूप में उद्धृत किया जाता है। क्योंकि जोसेफस एक भाषण की रिपोर्ट करता है जहां सिसारी के समूह के नेता एलीज़ार कहते हैं, आइए अपमानित न हों और रोमनों को हम पर विजय प्राप्त करने दें। चलो बस खुद को मार डालो।

और इसलिए, वे सभी स्वयं को मार डालते हैं, स्वयं को मार डालते हैं। और अगले दिन रोमन अंदर आये और उन सभी को मृत पाया। खैर, इस भाषण के लिए जोसेफस का स्रोत क्या है? कुछ महिलाएँ ऐसी भी थीं जो छुपकर बच गईं।

जोसेफस हमें कोई सुराग नहीं देता कि वे भाषण के स्रोत थे। और मुझे संदेह है कि वे नहीं थे। क्योंकि मेरा मतलब है कि यह एक भाषण है जहां यह कट्टरपंथी राष्ट्रवादी भाषा में आत्मा की अमरता के बारे में बात कर रहा है जैसे कि यह प्लेटो से ली गई है।

और ये महिलाएँ, जैसा कि हम आमतौर पर इस प्रकार के हलकों में महिलाओं की शिक्षा के स्तर के बारे में जानते हैं, शायद उस भाषण को पुनः प्रस्तुत करने में सक्षम नहीं होतीं, भले ही एलीज़ार इसे देने में सक्षम होता, जो कि वह शायद नहीं था। तो, जोसेफस शायद उस भाषण की रचना में अपने अलंकारिक कौशल का प्रदर्शन कर रहा था, और शायद उसके सभी श्रोता जानते थे कि वह यही कर रहा था। वहां कोई रहस्य नहीं है।

लेकिन आम तौर पर जब इतिहासकारों के पास किसी भाषण के सार तक पहुंच होती है, तो वे इसका उपयोग करते हैं। और इसे जितना संभव हो सके व्यक्ति और चरित्र के अनुरूप बनाना सबसे अच्छा माना जाता था। थ्यूसीडाइड्स का कहना है कि जब यह उपलब्ध था तो वह आम तौर पर बुनियादी जोर का पालन करते थे।

लेकिन वह यह भी स्पष्ट है कि वह इसे शब्दशः नहीं कर सकता। वह बस उपलब्ध नहीं था। वह प्राचीन इतिहासलेखन का हिस्सा नहीं था।

और फिर, व्याख्या एक मानक अभ्यास था, भले ही उनके पास शब्दशः इसकी पहुँच हो। लेकिन बाद के इतिहासकारों ने अक्सर पहले के इतिहासकारों के भाषणों को ही दोबारा लिख दिया। एक बार यह इतिहास में था, यह एक स्रोत था।

तो, उन्होंने बस पदार्थ को एक नए तरीके से रखा। तो सवाल ये है कि क्या इसके बारे में लिखने वाले पहले इतिहासकार को इसकी जानकारी थी? और अक्सर प्रथम ने ऐसा इसलिए किया क्योंकि वे वहां मौजूद लोगों का साक्षात्कार कर सकते थे, कम से कम भाषण के सार को याद रख

सकते थे, क्योंकि भाषणों को ऐतिहासिक घटनाएँ माना जाता था। लेकिन हमेशा उनकी पहुंच इस तक नहीं थी।

तो, यह इतिहासकार पर निर्भर करता है। यह विशेष परिस्थितियों पर निर्भर करता है। 20वीं सदी के आरंभिक अधिनियम विद्वान डेबेलियस ने तर्क दिया कि इतिहासकार अलंकारिक रूप से भाषणों की रचना करते हैं।

और यह सत्य है, यह इस पर निर्भर करता है कि आप रचित शब्द को कैसे परिभाषित करते हैं। इसका मतलब यह नहीं है कि जब उनके पास स्रोत उपलब्ध थे तो उन्होंने स्रोतों का उपयोग नहीं किया। यहां तक कि लिवी भी, जो फिर से प्राचीन इतिहासकारों में सबसे अधिक सावधान नहीं है, पॉलीबियस के भाषणों के मूल सार का पालन करता है जहां उनके पास पॉलीबियस में उपलब्ध है और जहां सामग्री उत्कृष्ट है और हम दोनों की जांच कर सकते हैं।

तो, सच्चाई शायद उन लोगों के बीच में है जो कहते हैं, आप जानते हैं, भाषणों को बहुत सटीक रूप से संरक्षित किया गया था और भाषण बस बना दिए गए थे। कभी-कभी नोट ले लिए जाते थे। आदर्श यह था कि जब सार उपलब्ध हो तो उसे ठीक से प्राप्त कर लिया जाए।

इसके अलावा, जब आप भर रहे थे तो आप उपलब्ध होने पर प्रोसोपोपोइया का उपयोग करेंगे, भाषण देने वाले की शैली और उचित भाषण-निर्माण तकनीक के बारे में आप जो जानते थे उसका उपयोग करने का प्रयास करेंगे। आप ऐतिहासिक सत्यनिष्ठा के लिए कार्य करेंगे। आप इसे जितना संभव हो उतना करीब से प्राप्त करेंगे।

इसलिए, प्रामाणिकता, ध्यान रखें, प्राचीन इतिहासलेखन आधुनिक इतिहासलेखन के समान शैली नहीं है। इसलिए, यदि हम इसे इसकी अपनी शैली के मानकों के आधार पर आंक रहे हैं, न कि उस पर कृत्रिम रूप से थोपे गए कुछ मानकों के आधार पर, तो प्रामाणिकता का मतलब आधुनिक इतिहासकार के तरीके से कुछ अलग है। खैर, अधिनियम की पुस्तक में क्या मामला है? खैर, शायद ल्यूक अब भी वही इतिहासकार है जैसा वह तब था जब उसने ल्यूक का सुसमाचार लिखा था।

यदि आप ल्यूक में यीशु की बातों की तुलना करते हैं, तो ओह, हमारे पास वही स्रोत हैं जो हमारे पास अन्य सुसमाचारों में हैं। मेरा मतलब है, खासकर जब वह उन्हीं स्रोतों का उपयोग कर रहा हो। उसके पास कुछ अतिरिक्त भी हैं।

उनके पास कुछ ऐसा है जो उसके पास नहीं है इत्यादि। लेकिन इसमें से अधिकांश, ल्यूक के पास प्रामाणिक स्रोत हैं और जहां हम उनकी तुलना कर सकते हैं। आप जानते हैं, वह मार्क के व्याकरण को साफ़ कर सकता है, लेकिन यह वही कहावत है इत्यादि।

इसके अलावा, अधिनियमों में भाषणों के संबंध में, ल्यूक को कम से कम इनमें से कई भाषणों के सार तक पहुंच होनी चाहिए थी। मेरा मतलब है, पिन्तेकुस्त के दिन पीटर का भाषण एक बड़ी बात रही होगी। लोगों को याद होगा कि उन्होंने किस तरह की बात की थी।

शायद विवरण नहीं, लेकिन निश्चित रूप से उस तरह की चीज़ जिसके बारे में उन्होंने बात की। और ऐसा ही कई अन्य अवसरों पर भी हुआ और निश्चित रूप से उन अवसरों पर भी जहां वह मौजूद थे। अब, इनमें से कुछ पर हम बहस कर सकते हैं, ठीक है, यह उस तरह की बात है जो उन्होंने कही थी।

यह प्राचीन इतिहासलेखन की शैली के अंतर्गत होगा। यदि आप वह सब नहीं जानते जो पतरस ने किसी अवसर पर कहा था, लेकिन आप जानते हैं कि यरूशलेम प्रेरितों ने इसी के बारे में बात की थी, तो आप भाषण में उस प्रकार की सामग्री का उपयोग कर सकते हैं। लेकिन भाषणों को स्वयं स्मृति के योग्य ऐतिहासिक घटनाएँ माना गया और यह सोचने का कारण होगा कि इनमें से अधिकांश को संरक्षित किया गया होगा।

अलंकारिक इतिहासकारों को जोसेफस की तरह विस्तार करना पसंद था, लेकिन इनमें से कई विशिष्ट इतिहासकारों ने विस्तार से बताया। लेकिन अधिनियमों में भाषणों को देखें। क्या वे विस्तृत हैं? क्या वे लम्बे हैं? अधिनियमों में हमारे पास भाषण सारांश हैं।

ये बहुत छोटे भाषण हैं। यहां तक कि अधिनियम 2, मेरा मतलब है, आपको लगता है कि भाषण लंबा हो सकता है, लेकिन पूरे भाषण को पढ़ने में बहुत अधिक समय नहीं लगता है। अध्याय 2 और श्लोक 40 में, ल्यूक कहते हैं, और कई अन्य शब्दों के साथ, पतरस ने उन्हें प्रोत्साहित किया।

तो, यह एक भाषण सारांश है। ल्यूक अपनी बयानबाजी दिखाने के लिए बाहर नहीं है। ल्यूक आपको वह देने के लिए निकला है जो उसके पास है।

वह सुसंगत विषयों को सामने लाने के लिए संपादन करता है, लेकिन जैसा कि सीएच डोड ने बहुत समय पहले बताया था, संभवतः कुछ काफी सुसंगत विषय भी थे, ऐसी चीज़ें जिनके बारे में प्रेरित अक्सर प्रचार करते थे। जिस तरह का प्रेरितिक संदेश हमारे पास नए नियम में कहीं और है, हमारे पास यह विश्वास करने का अच्छा कारण है कि वह प्रेरितिक उपदेश के केंद्र में था, खासकर जहां प्रारंभिक ईसाई धर्म में हमारी एकरूपता है। तो, हम इसके बारे में बाद में और बात करेंगे, लेकिन केवल यह कहना है कि प्राचीन इतिहासकारों के भाषणों में विश्वसनीयता की एक सीमा थी।

लेकिन अगर हम ल्यूक की तुलना बुनियादी ऐतिहासिक आधार पर भी उससे करने जा रहे हैं, तो हमारे पास कई अन्य प्राचीन इतिहासकारों की तुलना में ल्यूक के भाषण लेखन का अधिक सम्मान करने का कारण है।

यह एक्ट्स की पुस्तक पर अपने शिक्षण में डॉ. क्रेग कीनर हैं। यह सत्र संख्या 3, ल्यूक की इतिहासलेखन है।